रविवार 8 दिसंबर, 2019

विषय — ईश्वर ही एकमात्र कारण और निर्माता है

स्वर्ण पाठः **भजन संहिता** 148 : 11-13

"हे पृथ्वी के राजाओं, और राज्य राज्य के सब लोगों, हे हाकिमों और पृथ्वी के सब न्यायियों! हे जवानों और कुमारियों, हे पुरनियों और बालकों! यहोवा के नाम की स्तुति करो, क्योंकि केवल उसकी का नाम महान है; उसका ऐश्वर्य पृथ्वी और आकाश के ऊपर है।"

उत्तरदायी अध्ययन: **भजन संहिता 95 : 1-7**

1 आओ हम यहोवा के लिये ऊंचे स्वर से गाएं, अपने उद्धार की चट्टान का जयजयकार करें!
2 हम धन्यवाद करते हुए उसके सम्मुख आएं, और भजन गाते हुए उसका जयजयकार करें!
3 क्योंकि यहोवा महान ईश्वर है, और सब देवताओं के ऊपर महान राजा है।
4 पृथ्वी के गहिरे स्थान उसी के हाथ में हैं; और पहाड़ों की चोटियां भी उसी की हैं।
5 समुद्र उसका है, और उसी ने उसको बनाया, और स्थल भी उसी के हाथ का रचा है॥
6 आओ हम झुक कर दण्डवत करें, और अपने कर्ता यहोवा के साम्हने घुटने टेकें!
7 क्योंकि वही हमारा परमेश्वर है, और हम उसकी चराई की प्रजा, और उसके हाथ की भेड़ें हैं॥ भला होता, कि आज तुम उसकी बात सुनते!

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 77 : 13 (कौन**)**

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

13 … कौन सा देवता भगवान के साथ बड़ा है?

2. उत्पत्ति 1: 1, 8 (*से 1st.*), 10 (*से* :), 11 (*से* :), 16, 21 (*से* :), 24 (*से* :), 27, 31 (*से 1st.*)

1 आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।
8 और परमेश्वर ने उस अन्तर को आकाश कहा।
10 और परमेश्वर ने सूखी भूमि को पृथ्वी कहा; तथा जो जल इकट्ठा हुआ उसको उसने समुद्र कहा।
11 फिर परमेश्वर ने कहा, पृथ्वी से हरी घास, तथा बीज वाले छोटे छोटे पेड़, और फलदाई वृक्ष भी जिनके बीज उन्ही में एक एक की जाति के अनुसार होते हैं पृथ्वी पर उगें।
16 तब परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतियां बनाईं; उन में से बड़ी ज्योति को दिन पर प्रभुता करने के लिये, और छोटी ज्योति को रात पर प्रभुता करने के लिये बनाया: और तारागण को भी बनाया।
21 इसलिये परमेश्वर ने जाति जाति के बड़े बड़े जल-जन्तुओं की, और उन सब जीवित प्राणियों की भी सृष्टि की जो चलते फिरते हैं जिन से जल बहुत ही भर गया और एक एक जाति के उड़ने वाले पक्षियों की भी सृष्टि की।
24 फिर परमेश्वर ने कहा, पृथ्वी से एक एक जाति के जीवित प्राणी, अर्थात घरेलू पशु, और रेंगने वाले जन्तु, और पृथ्वी के वनपशु, जाति जाति के अनुसार उत्पन्न हों।
27 तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की।
31 तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है।

3. यशायाह 40 : 25, 26, 28

25 सो तुम मुझे किस के समान बताओगे कि मैं उसके तुल्य ठहरूं? उस पवित्र का यही वचन है।
26 अपनी आंखें ऊपर उठा कर देखो, किस ने इन को सिरजा? वह इन गणों को गिन गिनकर निकालता, उन सब को नाम ले ले कर बुलाता है? वह ऐसा सामर्थी और अत्यन्त बली है कि उन में के कोई बिना आए नहीं रहता॥
27 क्या तुम नहीं जानते? क्या तुम ने नहीं सुना? यहोवा जो सनातन परमेश्वर और पृथ्वी भर का सिरजनहार है, वह न थकता, न श्रमित होता है, उसकी बुद्धि अगम है।

4. लूका 1 : 26-28, 30-32 (*से 1st* :), 33 (और का)-35, 46, 47

26 छठवें महीने में परमेश्वर की ओर से जिब्राईल स्वर्गदूत गलील के नासरत नगर में एक कुंवारी के पास भेजा गया।

27 जिस की मंगनी यूसुफ नाम दाऊद के घराने के एक पुरूष से हुई थी: उस कुंवारी का नाम मरियम था।
28 और स्वर्गदूत ने उसके पास भीतर आकर कहा; आनन्द और जय तेरी हो, जिस पर ईश्वर का अनुग्रह हुआ है, प्रभु तेरे साथ है।
30 स्वर्गदूत ने उस से कहा, हे मरियम; भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है।
31 और देख, तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना।
32 वह महान होगा; और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा।
33 ...और उसके राज्य का अन्त न होगा।
34 मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, यह क्योंकर होगा? मैं तो पुरूष को जानती ही नहीं।
35 स्वर्गदूत ने उस को उत्तर दिया; कि पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी इसलिये वह पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।
46 तब मरियम ने कहा, मेरा प्राण प्रभु की बड़ाई करता है।
47 और मेरी आत्मा मेरे उद्धार करने वाले परमेश्वर से आनन्दित हुई।

5. मत्ती 4 : 23 (*से 1st ,*)

23 और यीशु सारे गलील में फिरता।

6. लूका 18 : 35-43

35 जब वह यरीहो के निकट पहुंचा, तो एक अन्धा सड़क के किनारे बैठा हुआ भीख मांग रहा था।
36 और वह भीड़ के चलने की आहट सुनकर पूछने लगा, यह क्या हो रहा है?
37 उन्होंने उस को बताया, कि यीशु नासरी जा रहा है।
38 तब उस ने पुकार के कहा, हे यीशु दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर।
39 जो आगे जाते थे, वे उसे डांटने लगे कि चुप रहे: परन्तु वह और भी चिल्लाने लगा, कि हे दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर।
40 तब यीशु ने खड़े होकर आज्ञा दी कि उसे मेरे पास लाओ, और जब वह निकट आया, तो उस ने उस से यह पूछा।
41 तू क्या चाहता है, कि मैं तेरे लिये करूं? उस ने कहा; हे प्रभु यह कि मैं देखने लगूं।
42 यीशु ने उससे कहा; देखने लग, तेरे विश्वास ने तुझे अच्छा कर दिया है।
43 और वह तुरन्त देखने लगा; और परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ उसके पीछे हो लिया, और सब लोगों ने देख कर परमेश्वर की स्तुति की॥

7. प्रेरितों के काम 17 : 22-28

22 तब पौलुस ने अरियुपगुस के बीच में खड़ा होकर कहा; हे अथेने के लोगों मैं देखता हूं, कि तुम हर बात में देवताओं के बड़े मानने वाले हो।
23 क्योंकि मैं फिरते हुए तुम्हारी पूजने की वस्तुओं को देख रहा था, तो एक ऐसी वेदी भी पाई, जिस पर लिखा था, कि अनजाने ईश्वर के लिये। सो जिसे तुम बिना जाने पूजते हो, मैं तुम्हें उसका समाचार सुनाता हूं।
24 जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उस की सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता।
25 न किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वह तो आप ही सब को जीवन और स्वास और सब कुछ देता है।
26 उस ने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाईं हैं; और उन के ठहराए हुए समय, और निवास के सिवानों को इसलिये बान्धा है।
27 कि वे परमेश्वर को ढूंढ़ें, कदाचित उसे टटोल कर पा जाएं तौभी वह हम में से किसी से दूर नहीं!
28 क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं; जैसे तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, कि हम तो उसी के वंश भी हैं।

8. प्रकाशित वाक्य 4 : 11

11 कि हे हमारे प्रभु, और परमेश्वर, तू ही महिमा, और आदर, और सामर्थ के योग्य है; क्योंकि तू ही ने सब वस्तुएं सृजीं और वे तेरी ही इच्छा से थीं, और सृजी गईं॥

9. भजन संहिता 150 : 1 (*से*:), 6

1 याह की स्तुति करो! ईश्वर के पवित्रस्थान में उसकी स्तुति करो!
6 जितने प्राणी हैं सब के सब याह की स्तुति करें! याह की स्तुति करो!

10. भजन संहिता 34 : 3

3 मेरे साथ यहोवा की बड़ाई करो, और आओ हम मिलकर उसके नाम की स्तुति करें।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 497 : 5 (हम)-6

हम स्वीकार करते हैं और एक परम और अनंत भगवान को मानते हैं।

2. 295 : 5 *केवल*

भगवान मनुष्य सहित ब्रह्मांड का निर्माण और संचालन करता है।

3. 331 : 18 (परमेश्वर)-25

ईश्वर व्यक्तिगत है, सम्मिलित है। वह दिव्य सिद्धांत है, प्रेम, सार्वभौमिक कारण, एकमात्र निर्माता, और कोई अन्य आत्म-अस्तित्व नहीं है। वह सर्व-समावेशी है, और वास्तविक और शाश्वत और अन्य कुछ भी नहीं है। वह सभी जगह भरता है, और अनंत आत्मा या मन को छोड़कर ऐसी सर्वव्यापीता और वैयक्तिकता की कल्पना करना असंभव है। इसलिए सब आत्मा और आध्यात्मिक है।

4. 263 : 20-28

एक सृष्टिकर्ता को छोड़कर कोई नहीं हो सकता, जिसने सभी को बनाया हो। जो कुछ भी एक नई रचना लगती है, वह केवल सत्य के कुछ दूर के विचार की खोज है; वरना यह नश्वर विचार का एक नया गुणन या आत्म-विभाजन है, क्योंकि कुछ क्लिट से अपने परिमित भाव को देखकर विस्मय होता है और अनंत को प्रतिरूपित करने का प्रयास किया जाता है।

व्यक्तियों और चीजों की मानवीय और नश्वर भावना का गुणन रचना नहीं है।

5. 262 : 27-32

नश्वर कलह की नींव मनुष्य की उत्पत्ति का एक गलत अर्थ है। ठीक से शुरू करने के लिए सही तरीके से समाप्त करना है। मस्तिष्क से शुरू होने वाली हर अवधारणा झूठ से शुरू होती है। (9th June 2019 [4]). ईश्वरीय मन ही अस्तित्व का एकमात्र कारण या सिद्धांत है। कारण पदार्थ में, नश्वर मन में, या भौतिक रूपों में मौजूद नहीं है।

6. 286 : 31-8

पाप, बीमारी, और मृत्यु मानव भौतिक विश्वास में शामिल हैं, और ईश्वरीय मन से संबंधित नहीं हैं। वे वास्तविक उत्पत्ति या अस्तित्व के बिना हैं। उनके पास न तो सिद्धांत और न ही स्थायित्व है, लेकिन वे सभी के साथ है, जो सामग्री और अस्थायी है, त्रुटि की शून्यता के लिए, जो सत्य की रचनाओं का अनुकरण करता है। आत्मा की सभी रचनाएं शाश्वत हैं; लेकिन पदार्थ की रचनाएँ धूल में लौट जानी चाहिए। त्रुटि मनुष्य को मानसिक और

भौतिक दोनों तरह से दबा देती है। ईश्वरीय विज्ञान इस बात का खंडन करता है और मनुष्य की आध्यात्मिक पहचान को बनाए रखता है।

7. 302 : 31 (में)-10

... क्रिश्चियन साइंस में, आत्मा के व्यक्तिगत विचारों द्वारा प्रजनन लेकिन उन विचारों के दिव्य सिद्धांत की रचनात्मक शक्ति का प्रतिबिंब है। प्रतिबिंब, मानसिक अभिव्यक्ति के माध्यम से, माइंड के बहुपक्षीय रूपों के बारे में है जो लोगों के वास्तविक के मन को नियंत्रित करते हैं, प्रतिबिंब को नियंत्रित करने वाला सिद्धांत। परमेश्वर के बच्चों का गुणन किसी बात में प्रसार की शक्ति से नहीं होता है, यह आत्मा का प्रतिबिंब है।

कम व्यक्तियों के मामूली विवरण एक दिव्य व्यक्तित्व को दर्शाते हैं और आत्मा द्वारा निर्मित और निर्मित होते हैं, न कि भौतिक संवेदना से।

8. 332 : 23 (*यीशु*) (*से*.), 26-29

यीशु एक कुंवारी का बेटा था। ... उसके लिए मैरी का गर्भाधान आध्यात्मिक था, केवल पवित्रता सत्य और प्रेम को प्रतिबिंबित कर सकती थी, जो कि अच्छे और शुद्ध ईसा मसीह में स्पष्ट रूप से अवतार थे।

9. 539 : 27-4

यीशु के दिव्य मूल ने उन्हें मानव शक्ति से अधिक सृजन के तथ्यों को उजागर करने के लिए दिया, और एक मन को प्रदर्शित करता है जो मनुष्य और ब्रह्मांड को बनाता है और नियंत्रित करता है। सृष्टि का विज्ञान, यीशु के जन्म में इतना विशिष्ट, उसकी बुद्धिमानी और कम से कम समझ वाली बातों को प्रेरित करता था, और उसके अद्भुत प्रदर्शनों का आधार था। मसीह आत्मा की संतान है, और आध्यात्मिक अस्तित्व से पता चलता है कि आत्मा न तो दुष्ट और न ही नश्वर मनुष्य पैदा करता है, पाप, बीमारी और मृत्यु में खो जाता है।

10. 507 : 15-29

आत्मा का ब्रह्मांड ईश्वरीय सिद्धांत या जीवन की रचनात्मक शक्ति को दर्शाता है, जो मन के बहुआयामी रूपों को पुन: पेश करता है और यौगिक विचार मनुष्य के गुणन को नियंत्रित करता है। पेड़ और जड़ी बूटी, किसी भी तरह की अपनी स्वयं की प्रचार शक्ति के कारण फल नहीं देते हैं, लेकिन क्योंकि वे मन को प्रतिबिंबित करते हैं जिसमें सभी शामिल हैं। एक भौतिक दुनिया एक नश्वर मन और मनुष्य को एक निर्माता बनाती है। वैज्ञानिक ईश्वरीय रचना अमर मन और ईश्वर द्वारा निर्मित ब्रह्मांड की घोषणा करती है।

अनंत मन मानसिक अणु से अनंत तक सभी को बनाता और नियंत्रित करता है। सभी का यह दिव्य सिद्धांत उनकी रचना के दौरान विज्ञान और कला, और मनुष्य और ब्रह्मांड की अमरता को व्यक्त करता है। सृजन हमेशा दिखाई

दे रहा है, और हमेशा अपने अटूट स्रोत की प्रकृति से प्रकट होता रहना चाहिए। नश्वर भाव इस प्रकार प्रकट होता है और विचार सामग्री कहता है।

11. 69 : 13-16

आध्यात्मिक रूप से यह समझने के लिए कि एक रचनाकार है, ईश्वर, सारी सृष्टि को उजागर करता है, शास्त्रों की पुष्टि करता है, बिना किसी पक्षपात के, बिना किसी पीड़ा के, और मनुष्य की मृत्यु और सही और शाश्वत का मधुर आश्वासन लाता है।

12. 268 : 6-9

एक भौतिक आधार पर विश्वास, जिसमें से सभी तर्कसंगतता को घटाया जा सकता है, धीरे-धीरे एक मेटाफिजिकल आधार के विचार से उपज रहा है, हर प्रभाव के कारण के रूप में माइंड से दूर की ओर देख रहा है।

13. 262 : 5-7

क्रिश्चियन साइंस भगवान की पूर्णता से शून्य है, लेकिन यह उसे पूरी महिमा का वर्णन करता है।

14. 207 : 20-26

इसके एक कारण और भी हैं। इसलिए किसी अन्य कारण से कोई प्रभाव नहीं हो सकता है, और औकात में कोई वास्तविकता नहीं हो सकती है जो इस महान और एकमात्र कारण से आगे नहीं बढ़ती है। पाप, बीमारी, बीमारी और मृत्यु विज्ञान के नहीं होने के हैं। वे त्रुटियां हैं, जो सत्य, जीवन या प्रेम की अनुपस्थिति को रोकती हैं।

15. 415 : 1-5

अमर मन ही एकमात्र कारण है; इसलिए रोग न तो एक कारण है और न ही एक प्रभाव है। हर मामले में मन शाश्वत भगवान है, अच्छा है। सत्य में पाप, बीमारी और मृत्यु की कोई नींव नहीं है।

16. 521 : 5-11

जो कुछ भी बनाया गया है वह भगवान का काम है, और सब अच्छा है। हम आध्यात्मिक रचना के इस संक्षिप्त, गौरवशाली इतिहास (जैसा कि उत्पत्ति के पहले अध्याय में कहा गया है) को भगवान के हाथों में छोड़ देते हैं, न कि मनुष्य की आत्मा में, कोई फर्क नहीं पड़ता, — अभी और हमेशा के लिए परमेश्वर के वर्चस्व, सर्वशक्तिमानता और सर्वव्यापीता को स्वीकार करते हुए।

17. 143 : 26-31

मन भव्य रचनाकार है, और इसके अलावा कोई शक्ति नहीं हो सकती है जो कि मन से ली गई है। यदि माइंड पहले कालानुक्रमिक था, पहले संभावित रूप से है, और पहले अनंत काल तक होना चाहिए, तो माइंड को उसके पवित्र नाम के कारण गौरव, सम्मान, प्रभुत्व और हमेशा की शक्ति प्रदान करें।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6